







PRINTED AT THE
"CHITRAGUPTA PRESS."
BY RAMSAHAI VARMA
147 Cotton Street, Calcutta.

समभिरुद्धनय

पन्ना, ५-२३-३०

पर्यन्तनय

पन्ना, ५-२३-३१

निक्षेप ४ पन्ना, ५-६६ से ७५

माय निक्षेपे

पन्ना, ६-५८-६६

स्वाप्ना निक्षेपे

पन्ना, ६-५९-६९

द्रव्य निक्षेपे

पन्ना, ६-६१-६३

माय निक्षेपे

पन्ना, ७-६४-६६

द्रव्यगुण पर्याय

पन्ना, ७-७६

द्रव्यक्षेत्र काल माय

पन्ना, ७-७६

द्रव्यक्षेत्रे माय

पन्ना, ८-७७

कारण कार्य

पन्ना, ८-७८

निक्षेप नय व्यवहार नय

पन्ना, ८-१२-७९

सदभूत व्यवहार नय

पन्ना, ९

असदभूत व्यवहार नय

पन्ना, १०

द्रव्यार्थि नय

पन्ना, १०

पर्यार्थिक नय

पन्ना, ११

द्रव्यार्थिक नय और पर्यार्थिक नयके संक्षेप पन्ना, ११

उपादान निमित्त

पन्ना, १२-७९

धारप्रमाण

पन्ना, ११-१२-८० से १२०

प्रत्यक्ष प्रमाण

पन्ना, १३-९२-१०५-१०७

११०-११३-११४-११५

११६-१२०

१	॥	मिथ्यात्व गुणस्थान	पन्ना, १२१
२	॥	सासादन "	पन्ना, १२२
३	॥	मिथ " "	...	पन्ना, १२२
४	॥	अविरतसम्बन्धः,	पन्ना, १२३
५	॥	वैराविरत "	पन्ना, १२३
६	॥	प्रमत्त विरत (प्रमादि)	...	पन्ना, १२३
७	॥	अप्रमत्त विरत (अप्रमादि)	..	पन्ना, १२४
८	॥	अपूर्व करण (नियतवाद्) .		पन्ना, १२४
९	॥	अनियतवाद् (अनिशुक्ति करण)		पन्ना, १२५
१०	॥	सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान .		पन्ना, १२५
११	॥	उपशान्तमोह "		पन्ना, १२५
१२	॥	क्षीणमोह "		पन्ना, १२६
१३	॥	सयोग कंचली "		पन्ना, १२७
१४	॥	अयोग कंचली "		पन्ना, १२७

छव लेख्या द्वार पन्ना, १४६ से १७५ तक

(१) नाम द्वार	पन्ना, १५०
(२) वर्ण द्वार	पन्ना, १५१
(३) गंध द्वार	पन्ना, १५२
(४) रस द्वार .	पन्ना, १५३
(५) स्पर्श (करस) द्वार .	पन्ना, १५४
(६) प्रमाण द्वार	पन्ना, १५५
(७) लक्ष्य द्वार	पन्ना १५६ से १६५



॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

केवल ज्ञानीको सदा, बन्दु बे कर जोड़ ।
गुरु मुखसें धारण करो, अपनी जिदको छोड़ ॥
जिन वचन तहमेव सत्य, समभाव नहीं तांण ।
जतनासें वाचो, सही, येही प्रभुको वांण ॥



यह पुस्तक यत्नमें रक्खे । आदिमें अन्न
नक वाच ।

उदाहृ मृग तथा चिगगके चानणें
नहीं वाचें: पद. अन्नर. ओश्रो. अधिका.
आगा. पाश्रो. तथा कानो मान. मिर्डा.
हम्ब. दीर्घ. अशुद्ध. दृष्टा भाषामें लिख्यो
दृष्टो विद्वान कृपाकर शुधार लेवं संप्रह-
कर्ताकी यही नम्र विनती है ।

॥ शुद्धि-पत्र ॥

—१२२५—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३४	११	आधार	आचार
१३६	१	परमसंग्राहो	परमात्मसंग्रहो
१३८	३	आधार	आचार
१५१	१२	गायत्री	गायत्री
१५८	१	नम्र	निम्न
१६२	१२	रुद्राभ्यास	रुद्रभ्यास
१६६	५	नमस्तु	नमः
१६७	८	पल्लोपमरे असंग्रहात्	पल्लोपमरे असंग्रहा- भाग अधिक
१७९	७	रुद्र	रुद्र

नोट:—देहिंग और नोट के तारिन छोड़ कर पंक्ति (घोली) देखो ।

त्युं पांचो पद समस्तां.

मिथ्या तिमिर पुलाय ॥ ६ ॥

शुद्ध उपदेशक शुद्ध गुरु,

सेव्यां उपजे ज्ञान ॥

पत्थरकी प्रतिमा करे.

गुरु कारीगर जान ॥ ७ ॥

ज्युं माधु मंगति थकी.

शुद्धरं आत्म ज्यांत ॥

अनुभव टापक हाथमें.

निज घर हांय उद्यांत ॥ ८ ॥

भारी कर्मा जाव कां.

धम वचन न सुहाय ॥

ज्युं उग्र व्यापित देहमे.

अस्त्रां अस्त्रकां धाय ॥ ९ ॥

तिम मिथ्यान्व उग्र जार ने.

न हने अनुभव जान ॥

विषय कषाय मिथ्यान धां

हाथ नुमन को हान ॥ १० ॥

[६]

जेहनो भय धिनि घट गडं,
तेहने छे उपदेश ॥

भारी करमा जीव को,
जगे नहीं सब जेश ॥ १११ ॥

॥ अथ गाथा ॥

नाणं च दमणं चंय.चरित्तं च मयो तथा ।
एय मग्गमणपत्ता. जीथा गच्छंति सुगईं ॥ १ ॥

॥ व्याख्या ॥

नाण कर्हिण् सभ्यक ज्ञान । १। द० दर्शन
कर्हिण् तस्य श्रद्धा. शुद्ध सम्यक मःहणा ॥ २ ॥
च० बला चाग्त्र कर्हिण आश्रय रुधवा । ३।
त० तप कर्हिण इत्यादि गधन । ४। ए० ४
मार्ग ने दिने मण ५० प्रनुप्राप्त कर्हिण केडे ।
पटु त्या वला । जीव । जीव गच्छति जाइ सुग
इ० भवा गान ने मान गमण प्रत इत्यर्थः

T

T

11

12

ते मति ग्यान । तेहना २८ भेद प्रभवप्रत्यय
 तथा कर्मनें ज्योपसमें करो मर्यादा
 द्रव्य क्षेत्र काल भावना थाय, ते मर्याद वरती
 अवधी ज्ञान । तेहना ६ भेद मनपर्याय जाणें ते
 मन पर्यव ज्ञान ॥ अद्दी द्वीप वासी सत्रीपंचेद्री
 पर्यासना मनोगत भाव जाणें । ते मन पर्यव
 ज्ञान, तेहना २ भेद । विमुलरुजु सर्वजाणें, ते
 केवल ज्ञान । तेहना १ भेद । इम ५ ज्ञाननां
 इकावन भेद कछा नंदी सूत्रें । सविस्तर पणें
 घणा भेद पिण कछा ।



॥ यतः ॥

ज्ञानं पंच विधं प्रोक्तं श्रुत ज्ञानं त्रिसेपन
 जेन श्रवणमात्रेण, प्राप्यते परमं पदं । १ । मति
 ज्ञान १ श्रुत ज्ञान २ । अवध ३ । मनपर्याव ४ ।

गच्छति तिष्ठ वास्ते श्रुत ज्ञान नो उद्यम अवश्यं
करवां श्रुत ज्ञान नो संयोग जीवने पामवो
अस्यंत दुर्लभ ये ।

॥ उत्तराध्ययन त्रीजे अध्ययने

गाथा कही ॥

माणं मयि गार्हपत्यं । सूडधम्मस्स दुल्लंहा ।
जंमं च्छापडि वज्जंति । नयम्वंति महिमयं ॥१॥

इम जाणी अहो भव्य जीव श्रुत ज्ञान
मूणवानां तथा भणवानां उद्यम अवश्य कीजे
श्रुत ज्ञान नो संयोग पामोने पूर्व पुडगीकादि
गणधर घणा जाव नग्ग्या तथा वर्तमान काले
महाविदेह स्रं ग्रामे वत्स तीर्थरुग्गो वार्णा सांभस्व
ने घणा जाव नग्गे अनागत काले श्रीपटमनाभ
तीर्थरुग्गो वार्णा द्रुपदस्य प्रमुख सांभस्व घणा
जाव नग्गो । नग्ग्ये । आत्त पिण जे श्रुत
ज्ञान ने भणस्ये नामस्ये अनागे अहो रुदि

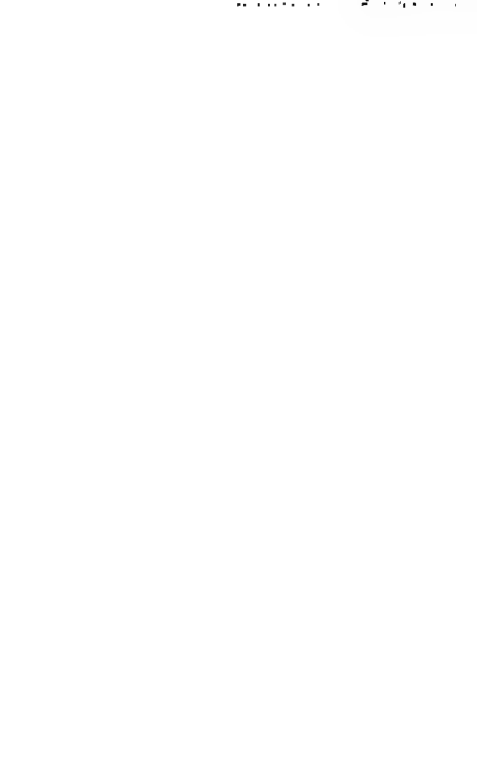
प्रतीत करसे ते सूलभ बोधि हुसे परंपरायें
मुक्ती पद पामसे ।

॥ उत्तराध्ययन गाथा ३६ मां ॥

जिणवयणे अणूरत्ता । जिणवयणं जेकरंति
भावेण अमलाअसंकिलठा । ते हुंति परित्तं
संसारी ॥ १ ॥

इत्यादि विस्तार श्रुत ज्ञान नो मुख्यता
पणो बतायो ते श्रुत ज्ञान सम्यगं दृष्टिने होवे
छे मिथ्यात्वी ने श्रुत अज्ञान होवे छे ते कारणो
सम्यक्त प्रगट थावानो निमत्त कारण श्रुतज्ञान
सुत्र सिद्धांतनो सांभलवो छे ते सम्यक्त नो निमत्त
कारण जाणिवो जे भणी श्रुत ज्ञान नो विचार
भाषा रूप संक्षेप पणे कहिए छे तिहां प्रथम
तो ज्ञान जीवने छे ते जीव किण प्रकारे भ्रमण
करे छे ते कहेछे जीवाभोगम सूत्र नें अनुत्तारे
नित्य भ्रमण दिखावे छे जीव अनादियो छे
तिहां प्रथम घर जीव नो निगोद छे जे निगोद

मांहि परिश्रमण करतां अनंत काल थक बीत-
जाय जद पृथ्वी (१) अप (२) लेउ (३) वायु
(४) बनारपतो प्रत्येक (५) देंद्री (६) तेंद्री (७)
चोरिंद्री (८) पंचेद्री (९) तियंच (१०) नारवी
(११) देवता (१२) मनुष्य (१३) इत्यादि ८४
लप्य जोनमें ४ गतिमें ८ कर्म ने बसी पड्यो
नाना रूप धरतो जन्म जरा रोग सोग विजोग
मरण इत्यादि दुखं पीड्यो परिश्रमण करे छे
किवारे नरक वेदना किवारे परघस्यनी वेदना
किवारे गर्भावासमें किवारे भूत्र किवारे तृपा
किवारे छं दण भं दण बंधण इत्यादि दुख अनु-
भवतां इस भ्रमण करता अनंत काल गमायो
अनंत पुद्गल परावर्तन किधा निज गुण भूह्यो
पर गुण गच्छ्यो आप आपरो भं द ना पिछाएयो
जिम मद्य पान किधां व्यामोहप्रव्यलना मृदता
उपजे निम अनादि मिथ्यात्व पणं गहिलवत
स्वगुण मुल्यो निज अवस्था थी विकल थइ ग्यो



अपूर्व कहतां पहिलां कदेन आव्यो एहवो
जे परिणाम ते अपूर्व करण ए वीजो करण
सम्यक्त योग्य जीव ने थाय ।

॥ हिवे तीजो अनिवृत्ति करण

ते कहे छे ॥

जे मुहुर्त्तरूप स्थिती मिथ्यात्व नी रहि हुंती
ते खपावे अने निर्मल शुद्ध सम्यक्त पामें मिथ्या
त्व नो उदय मिथ्यो तव जीवउपसम सम्यक्त
पावे ते अनंतानुबंधी की चोकड़ी [४] मिथ्यात्व
मोहनी [५] मिश्र मोहनी [६] सम्यक्त मोहनी
[७] ए सात प्रकृति उपसमावे तो उपसम
सम्यक्त कहीए अने एहीज सात प्रकृती खपावे
तो जायक सम्यक्त कहीए अने ६ प्रकृति नो
अण उदय थाय जे उदह आवेसो खपावे और
सत्ता में है सो उपसमावे सम्यक्त मोहनी नो
उदय हे ते जयोपमम सम्यक्त कहीए एहवा
जे सम्यक्तवत परिणाम ते अनिवृत्त करण

सेवे नहीं आगम सप्त नय च्यार प्रमाण च्यार
 निक्षेपा द्रव्य क्षेत्र काल भाव सामान्य (१)
 विशेष (२) ए निश्च [१] विवहार [२] एवं
 सर्व पूर्वोक्त वचन शुद्ध आगम परूपे तेहने
 विवहार सम्यक्त कहीए ए पूर्वोक्त सम्यक्ती नो
 विवहार छे ए व्यवहार सम्यक्त अभव्यने पिण
 संभवे छे ए विवहार आराध्यां विना उपरली
 धेवे किम जावे ते व्यवहार सम्यक्त कहीये ए
 पुन्यनो कारण छे तथा धर्म प्रगट करवानो
 कारण छे एहवी रुचि ज्ञान विना घणा जीवा
 ने उपजे एहवो सम्यक्तनो व्यवहार जीवने
 अनंतीवार पाम्यो छे नवमां पूर्वती श्रीजी बहू
 लगी अभव्यी जीव भणें छे अने परूपे छे
 पिण अंतरंग आत्म स्वभाव ना ओलखी शुद्ध
 सहहणा पिण ना पावे ते व्यवहार सम्यक्त
 कहीजें ।

॥ अत्र हेतु दृष्टान्त कहे ॥

जिम राजा वक्र सिञ्चित अम्भारुद्ध धड़ने
भीलाना वन ने घिपे जाय पट्यो भील पकड़ीने
आपणे घरे लेई बैठायो तो राजा आपणे
मंदिर तथा चित्रसभा मृगांची इत्यादि वस्त्र
ने भूले नहीं तिम जीव कर्म रूप भीलाने वस्त्र
पट्यो पर निज घर शानादि निज परणित
आत्माने भदने (परणित आत्म भदने) भूले
नहीं ए सम्यक्त होय नेहने ज्ञान होय ।

नादंनरिणसुनारुं सम्यक्त नो ज्ञानयंतने
 होय धरुनानीने सम्यक्त ना होय ते भणि ज्ञान
 नो रवण्य धोलग्याये तं तं ज्ञान दोय प्रकार छे
 एक व्यवहार ज्ञान बीजो निर्धे ज्ञान निहां
 प्रथम व्यवहार ज्ञान यहें तं जिण (जैन)
 धर्मना शास्त्र जैन ज्ञानम नो भगवो अनुयोग
 कहिण विस्तार व्याख्यान ते अनुयोग नीत. धर्म
 कथानुयोग (१) चरुणानुयोग (२) कर्मणा-

कारण (२) मोक्ष करणहार (३) मोक्ष रूप
 (४) तत्त्विदानंद एहवो, जे अनुभाव रूप, जे
 आत्मा तेहीज निश्चै ज्ञान । ज्ञान आत्मामें भिन्न
 नहीं आया से पिताया, दित्तायासे ब्याप्य इति
 वचनात् तेहनें मूल मिथ्यात्व साहनी उदय
 नहीं आत्मा नो उजल पणो ते ज्ञान, जिम
 सूर्य विमान नो निज गुण तेज पणो अक्ष
 पटल धी द्यपो निम्तेज धपो अक्ष पटल दुर
 द्यपो जाउदलमान तेज प्रगट्यो, जिम ज्ञाना
 परणी रूप अक्ष पटल दुर द्यपो मिथ्यात्व मो-
 हितो द्यपो निधं ज्ञान कहीजे, निधं ज्ञान
 निधं सम्यक्त्व ने ह्ये व्यवहार ज्ञान व्यव-
 हार सम्यक्त्व ने होये इति ज्ञान कहाँ ।

हिबे ज्ञान नो विस्तार कहे छे उत्तरा-

प्यपन सूत्रमें २ = मां अप्यपनमें

कह्यो ॥

माने लंजान्दभाये दंमरुं नयनारह

अग्निमेतन्नगिद्वाहं सर्वेणगमिद्भूतम् ॥ १ ॥
 इति वचनान्न ज्ञानमे कर्तुम्, पदार्थं ना ज्ञान
 इव इत्ये कर्तुम्, पदार्थं सर्वं ज्ञानमे इव ही
 पदार्थं हं ।

॥ उनराध्ययन २८ माध्ययनमे गाथा ॥

पद्माधमाम्गमाः । कातागामातजंनरा ।
 एततांगामातिगताः । त्रिगोर्द्विगद्महं ॥ १ ॥ इम
 कथा धर्माग्निकाय १) अथर्माग्निकाय २)
 आरागाग्निकाय ३) काय ४) पुद्गाग्नि
 काय ५) भावाग्निकाय ६) अथ इत्यनेन शोक
 कथा ए वद इत्ये शोकमा ७) न वद इत्यने
 त्रिगो वानगाम उग्रधान ज्ञान कम इत्यने
 गुण एवाय करा तागा स्वतः ४ स्वगुण स्वप-
 र्याय आश्रयण ५ नानिह ज्ञान ॥ उनराध्ययन
 २८ माध्ययन मे कथा ॥ अथ पश्य वि ह नागा
 इत्याणाय गुणाणाय पञ्जवागाचमः ॥ नागा -
 नागाह दीनिय ॥ १ ॥ अथ ए मानज्ञान आद

[व]

पांच ज्ञाने करी द्रव्य गुण पर्याय सर्व द्रव्यने
जाणो ते ज्ञानी कहिए ।



सुत्रकी गाथा अकालमें भरी होय अकालमें
लोखी होय छपाइ होय ज्ञानादी की असातना
कीनी होय अक्षर पद आगो पाछो ओछो
अधिको अशुद्ध लीख्यो होय जाणते अजाणते
दोष लाग्यो होय तस्समिच्छमि दुक्कडं ।

सेवं भंतं सेवं भंतं

॥ इति ॥





॥ अहिंसा परमा धर्म ॥

अथ श्री नय
प्रसादाकां थोकडो

श्री अनुगंगार भुव मे नय निक्षपा कां
थोकडो चान्द्रा उनका २५ दार करके निम्न हूँ

॥ नाम ॥

(१) नय - अनन्तर ३ उच्चगुण प्रयास

भिरुद्ध नय (७) एवंभूत नय ।

नैगमनय किसको कहते हैं ?

दो पदार्थोंमेंसे एकको गौण और दूसरेको प्रधान करके भेद अथवा अभेदको विषय करनेवाला ज्ञान नैगम नय है तथा पदार्थके संकल्पको ग्रहण करनेवाला ज्ञान नैगम नय है जैसे--कोई आदमी रसोइमें चावल लेकर चुनता था, किसीने इससे पूछा कि क्या कर रहे हो, तब उसने कहा के भात बना रहा हूँ, यहाँ चावल और भातमें अभेद विविक्षा है, अथवा चावलों में भातका संकल्प है ।

संग्रह नय किसको कहते हैं ?

अपनी जातीका विरोध नहीं करके अनेक विषयोंका एक पनेसे जो ग्रहण करे, उसको संग्रह नय कहते हैं, जैसे--जीवके कहनेसे चारों गतिके सब जीवोंका ग्रहण होता है ।

पर्यार्थिक नय किसको कहते हैं ?

जो विशेषको (गुण अथवा पर्यायको)
विषय करें ।

द्रव्यार्थिक नय और पर्यार्थिक
नयके भेद ।

इसमें तर्कवादो श्रीमान् सिद्धतेन दिवाकर
तीन द्रव्यार्थिक नय मानते हैं, जिसका नाम--
नेगम (१) संप्रह (२) व्यवहार (३) ए तीन
मानते हैं, और सिद्धांत वादी श्रीजिनभद्र गणि
खमासमण द्रव्यार्थिक नय चार मानते हैं,
जिसका नाम--नेगम (१) संप्रह (२) व्यवहार
(३) रुजुसुत्र (४) ए चार मानते हैं, अपेक्षासे
दोनु महापुरुषोंका मानना सत्य है । कारण
रुजुसुत्र नय प्रणाम प्राही है और वर्तमान
काल और भाव मित्र प माननेवाला है । इस-
लिये पर्यार्थिक नय मानी गई है, और दूसरी

१२] श्री नय प्रमाणको थोकड़ो ।

अपेक्षासें रुजुसुत्र नय शुद्ध उपयोग रहित होनेसे द्रव्यार्थिक नय मानी गई है, तत्त्व केवलि गम्य ।

॥ व्यवहार नय कोई चार कहते हैं जैसे—नेगम नय, संपद नय, व्यवहार नय, रुजुसुत्र नय, ए ४, कोई तीन कहते हैं जैसे—नेगम नय (१) संपद नय (२) व्यवहार नय (३) ए नीति ए, अपेक्षा बचत है अपना गरजसे ना आयेना शका ना लाये तत्त्व केवलि गम्य मयेव मन्थय ।

॥८॥ उपादान निमित्त ।

उपादान शिष्यका निमित्त गुरुको मिल्यो जय ज्ञानकी प्राप्ति हुई ।

॥९॥ चार प्रमाण ।

(१) प्रत्यक्ष प्रमाण (२) आगम प्रमाण (३) अनुमान प्रमाण (४) आपमा प्रमाण ।

प्रमाण ने कोने कहाँ, सम्यक् ज्ञान-ते संशय, विपरान अने अननाध्यवसाय ए प्रण टाप रहित होय नेहने प्रमाण कहाँ, संशय

कहेतां लीप (सीप) जमीन उपर पड़ी लें ते निश्चय
कर्या बिना कहे के ने चांदी देखाय लें अथवा
लीप लें तेना निर्णय न करे ते. विपरीत कहेतां
एम घालेके लीप ना समुद्रमां होय, अहां क्यांधी
होय ? मांटे चांदी लें . एम नक्री करी वैसे ते ।

अनाप्यवमाय कहेतां निर्णय कर्या बिना
घाले के अन्य जन थी आपणे सुं काम लें.
शुं मतलय लें ए प्रण दोष रहित होय तेने
सम्यक ज्ञान अथवा प्रमाण नय कहोण ।

एवं प्रमाण नयना ये भेद---प्रत्यक्ष अने
परोक्ष ।

प्रत्यक्ष-प्रति कहेतां नामे अक्ष कहेतां आंख
आत्मानां नामे आत्मा निवाय दीजानी महा-
यता बिना दस्तुना अरूपने जाणे तेने प्रत्यक्ष
प्रमाण कहोण. तेना ये भेद--देशधकी आने
सर्वधकी ।

देशधकी ने अवधि ज्ञान. मनः पर्यंत ज्ञान ।

उत्पन्न, नाण, दंसण घरा, अरहा जीन केवलीके
जेनी अर्थरूप परुपेली द्वादशांगी वाणी तथा
गणधर महाराजनी गुथेली पाठरूप द्वादशांगी
वाणी जेना अण भेद--अत्तागमे, अणंतरागमे,
परमपरागमे ।

अत्तागमे कहेंता तीर्थंकर महाराजनी अर्थ-
रूप वाणी ते अने अणंतरागमे कहेंतां गणधर
महाराज बोले ते ।

परमपरागमे कहेंतां धीजा शिष्य बोले ते ।

पली अत्तागमे कहेंतां धीजा शिष्य बोले ते ।

परंपरागमे कहेंतां आगल बोले ते ।

हवे उपमा प्रमाणना अन भेद, किंचित,
प्राय, अन्योन्यः ।

किंचित ते कोने कहौण, उदाहरण--जेमके
सरस्वना दाणा जेवी मेरु पर्वतः द्वारका देव-
लोक जेवी धीगेरे वगैर ।

बोडुं प्रायः ते कोने कहौण, गाय रोभ
सरखी ।

२०] श्री नय प्रमाणको थोकड़ी !

भावि नेगम है, और वर्तमान नेगम यह है कि जो वस्तु निव्यन्न हुई वा नहीं हुई उसको वर्तमान नेगम अपेक्षा इस प्रकारसे कहना जैसे के तंडुल पकते हैं अर्थात् औदनः पच्यते, चावल पक रहे हैं सो इसका नाम वर्तमान नेगम नय है ।

(२) संग्रह नय भी दो प्रकारसे वर्णन किया गया है जैसे कि सामान्य संग्रह (१) विशेष संग्रह नय (२) अपित्रु सामान्य संग्रह इस प्रकारसे है जैसे कि सर्व द्रव्य परस्पर अविराधी भावमें है अर्थात् सर्व द्रव्योंका परस्पर विराध भाव नहीं है. अपित्रु विशेष संग्रह में यह विशेष है कि जैसे कि जीव द्रव्य परस्पर अविराधी भावमें है क्योंकि जीव द्रव्यमें उपयोग लक्षण वा चेतन-शक्ति एक सामान्य ही है सो सामान्य द्रव्योंमें से एक विशेष द्रव्यका वर्णन करना उर्मीका ही नाम संग्रह नय है ।

(३) व्यवहार नय भी दो प्रकारसे ही कथन किया है, जैसे कि १ सामान्य संग्रह-रूप व्यवहार नय जैसे कि द्रव्य दो प्रकार का है यथा जीव द्रव्य (१) अजीव द्रव्य (२) अपित्रु २ विशेष संग्रह-रूप व्यवहार इस प्रकारसे है जैसे कि जीव-संसारि (१) और मोक्ष (२) क्योंकि संसारि आत्मा कर्म-संयुक्त है और मोक्ष आत्मा कर्मोंसे रहित है इसलिए ही उनके नाम अजर, अमर, सिद्ध, बुद्ध, पारंगत, परंपरागत, मुक्त इत्यादि हैं जीव द्रव्यके दोय भेद यह व्यवहार नयके मतसे ही है, इसी प्रकार अन्य द्रव्योंके भी जान लें ।

(४) ऋजुसुत्र नय भी दो भेदसे कहा गया है. यथा जो समय समय पदार्थोंका नूतन पर्याय होता है और पूर्व पर्याय व्यवच्छेद हो जाता है उसीका ही नाम सुक्ष्म ऋजुसुत्र नय है. अपित्रु जो एक पर्याय आयु

श्रो नय प्रमाणको थोकड़ों । [२३]

में जिस वस्तुकी सता है, उसके गुण कार्य ठीक ठीक मानते वही समभिहृद् नय हैं ।

(७) एवंभूत नयके मतमें जो पदार्थ शुद्ध गुण कर्म-स्वभावकी प्राप्त हो गये हैं उसको उसी प्रकारसे मानना उसीका ही नाम एवं-भूत नय है, जैसे कि इदंती इन्द्रः अर्थात् ऐश्वर्य करके जो युक्त है वही इन्द्र है यही एवंभूत नय है ।

॥ पाठान्तर ॥

“सात नय स्वरूप”

॥१ नेगम॥

नेगम कहतां नदीकी धारा, प्रवाह सरीखो गम अने नेगम एक अंश मात्र, जे वस्तु ना गुण प्रगट हवै, तेहने सम्पूर्ण पणें वस्तु ने मानें सो नेगम नय कहैजे, ते नेगम नय का ३ भेद, भूत नेगम (१) भविष्यत् नेगम (२) वर्तमान नेगम (३) जो अतीत कालके विषे जो पदार्थ

हुवा, अरु वाही वर्तमानकी सीन्या कहणसे भूत नेगमनय कहिए, जैसे कोइ दीवालीके दिन कहै आज श्री वीर्रमान स्वामी मोक्ष गया असो कहणो (१) हवे भविष्यत नेगम, आगामी कालके जो पदार्थ होणहार है ते वर्तमानमें कहणो, जैसे उतराध्ययन १६ में अध्यायन, गृहवासी घसतां जुवराया दमीसरे असो कह्यो ते भविष्यत नेगम नय कहौजे (२) हवे वर्तमान नेगमनय, जे वस्तु करणी मांड़ी, किंचित् नीप-जा, निमकं सम्पूर्ण पणं कहणो, जैसे चांको दंतो (लीपनो) देखो तथा रसाइकी सामग्री भेली करना देखो पृथ्वी मुं करे छे तब कह्यो रसाइ कहं छे अस्मा कहणो (३) ।

॥ पाठान्तर ॥

नेगमनयना ३ भेद---गया कालनुं वर्तमान कालमां आरापण---जम निबंकरादिक वणव, वर्तमान कालनुं वर्तमान कालमां

॥ २ संग्रह नय ॥

संग्रहनय वालो, सामान माने विशेष नहीं माने तीन कालरी घात माने, निघोषा ४ माने, संग्रह संग्रह वस्तुको ग्रहण करे, एक शब्दमें अनेक वस्तु ग्रहण करे जैसे घनको घन कहे वनमें वस्तु अनेक है (जैसे किसीने कहा के घनहै संग्रह नय वालो वनमें जीतनी वस्तु है उसकुं एक वन शब्दमें ग्रहण करे) अथवा कोई साहूकारने अनुचर याने दासको कहा दांतण लावो तब वह दांतण लाया, भारी, फाच, कंघी, सुरमा, मिस्री, पाग, रुमाल, पोशाक, अलंकार इत्यादिक अनेक वस्तु लाया ।

संग्रह नयका दोय भेद है (१) सामान संग्रह. (२) विशेष संग्रह । हवे सामान संग्रह जो अर्जाव द्रव्य मांहे मांही अविरोध है ।

अचनन गुण अपेक्षा, सामान्य गुण र द्रव्यमां है ।

अजीव द्रव्यमें असो कहणो--ते संग्रह सामान्य पणें कहीजे ।

हवै विशेष संग्रह--जो परजातीका द्रव्य कुं छोडीकरी, स्वजाति स्वद्रव्यकों संग्रह करियें सो विशेष संग्रह कहीए ।

॥ ३ व्यवहार नय ॥

व्यवहार नय वालो, सामान्य सहित विशेष माने, तीनकालकी बात माने, निक्षेपा ४ माने, व्यवरो करे तेने व्यवहार कहिए जैसे--- व्यवहार में कोयल काली है निश्चयमें वर्ण पांच है ।

व्यवहार में धगलो धोलो है, निश्चयमें वर्ण पांच है । व्यवहारमें सुवो हरो है निश्चय में वर्ण पांच है ।

॥ ४ ऋजुसुत्र नय ॥

ऋजुसुत्र नय वालो, सामान्य नहीं

२८] श्री नय प्रमाणको थोकड़ो ।

माने विशेष माने, वर्तमान काल ही बात माने, निक्षेपो (१) भाव माने, पराई वस्तु को आपणें निरर्थक पणें जाणें, जैसे---आकाशमें फुल (कुसुम) लागा तां कहे निरर्थक, जिसपर किसीने कहा सौ वर्ष पहले सोनेकी वृष्टि हुई थी तां कहें निरर्थक, सौ वर्ष पीछे सोनेकी वृष्टि हुमी तां भी कहें निरर्थक, वर्तमान काल को मुख्य करके वस्तुको माने, वर्तमान परिणाम भावका ग्रहण करे ।

साहुवारकी बेटेकी बहुको दृष्टांत ।

जैसे कोई साहुकार अपने घरमें समायिक लेके बैठा था, उस वक्त्न अन्य पुरुषन आकर साहुकारकी बेटेकी बहुसे पुछा के बाई तेरा सुसरा कहाँ है तब वह बाली मेरा सुसराजी पसारीके यहां मूठ मिग्न खरीदने के लिए गये हैं, वा वहां जाकर साहुकारको तलाश किया परन्तु सठजी वहां नहीं मिले, तब वह

वापिस आकर साहुकारकी बेटेकी बहुसे पुआ के सेठजी वहां तो नहीं हैं। चताव कहां गये हैं; तब उसने कहा के मेरा सुसराजी मोचीके वहां जूता खरीदनेके लिए गये हैं तब वह पुरुष वहां जाकर भी तलाश किया तो भी सेठजी नहीं मिले तब वह पीछा आकर बोला वाइ सेठजी तो वहां भी नहीं है, इतनेमें सेठजीकी समायिक आगइ और सेठजी समायिक पाड़करके उस मनुष्यसे बात चीत करके उत्तको तो सीखदी और आप फिर अपनी बेटेकी बहुसे कहा के हे बहु तू जानती थी के में समायिक लेकर घरमें बैठा था, फेर विचारा उस आदमी को नाहक तकलीफ क्यों दी, तब बहुने कहा के आपका मन दोनों ठिकाने गवा के नहीं? तब सेठजी बोले हां गया था, ऐसे चौधी ऋजुसुत्र नय वालो, वर्तमान कालमें जैसा परिणाम (परणाम) हुवे वैसीही बात माने ।

हुवे को पुरेन्द्र माने ; और देवता की सभामें
बैठ कर देवता का न्याय (इन्साफ) करते
वस्तु देवेन्द्र माने ; और देवियोंकी सभामें
नृत्यादि विलास करते हुवेको शचीपति माने ।

॥ ७ एवं भूत नय ॥

एवं भूत नय---सामान्य नहीं माने,
विशेष माने वर्तमान काल की बात माने
निश्चयो एक भाव माने. सरीखा शब्दको
उपयोग सहित जुदा जुदा अर्थग्रहण करें जैसे-
शक्रेंद्र शक्र आश्रम पर बैठा हुवा अपनी
शक्तिसे जबरदस्ती उपयोग से घेरी देवता को
आण मनावे उस वस्तु शक्रेंद्र माने : पुरेन्द्र
बैरी देवताके ऊपर हाथमें धजू लिये खड़ा
है, उपयोग सहित बैरी देवताके पुरको बिटारे
उस वस्तु पुरेन्द्र कहिये : देवेन्द्र देवताकी सभा
में बैठा हुवा उपयोग सहित न्याय (इन्साफ)
करे उस वस्तु देवेन्द्र माने : शचीपति इन्द्रा-

खँचे अने दुजीने हाथसे छोड डाले तो भी काय्य सिद्ध थाय नहीं । इण दृष्टाने चगी दाँय नय मांही कीणही ठिकारण निधय नयकी मुख्यता कीजै अने व्यवहार नयकी गुणता कीजै ।

अने किणही ठीकारण व्यवहार नय करे मुख्यता कीजै अने निधय नयकी गुणता कीजै तो सम्यक् प्रकार धार अने एक बय माने दोजी न माने तथा एकताप दोनु खँचे दा एकताप दोनु टोली छोडै तो सम्यक्-रूप सोण काय्य सिद्ध ना हुबै, इतलिए कुछ सम्यक्-इत नें नय नय प्रमाण करीजे ।

इतपर एक अंधे पांगलेका दृष्टान्त, जेने--
अंधेके पाँपेर पांगलो पैटे पांगलो बन्तारे अंधो चले दोनु निज्या नाय्य ओरंधे, इतो तरह निधय ओर व्यवहार नय दोनोंको साथ नाय्य काय्य सिद्ध होय ।

10

11

12

13

नगरमें रहते हो ? मैं पुण्डलीपुर नगरमें रहता हूँ ; पुण्डलीपुरमें तो पाड़ा बहुत है तुम किस पाड़ेमें रहते हो ? तब बोल्योके देवदत्त ब्राह्मण के पाड़ेमें रहता हूँ ; देवदत्त ब्राह्मणके पाड़ामें तो घर बहुत है तुम किस घरमें रहते हो ? तब वो बोल्यो के म्हारा निज आवास घरमें रहता हूँ ; यहां तक तां नैगम नय और व्यवहार नय वाले को मत । अब संग्रह नयवाला कहे के निज आवास घरमें तो बहुत जगह है तब वो कहे के म्हारा साधिया (विस्तार) प्रमाण रहता हूँ (सोना हूँ) अब चञ्चलुत्र नय वाला कहे के ऐना मत कहो । कहो कि मेरी आत्मा ने आकाश प्रदेश अवगाहिया उतनीही जगह में रहता हूँ ; अब शब्दादिक तीन नय

(शब्द नय, समभिरुद्ध नय, एवंभूत नय)

वाला कहे कि ऐना मत कहो । क्योंकि आत्मा जीव है और अजीव है । जीव तो सुक्ष्म निर्गोचर

बहुलतर विशुद्ध नैगम नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि एक मोहल्लामें अनेक घर है, तो आप कौनसे घरमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं मध्य घर (बीचघर) में वसता हूं; यह विशुद्ध नय है यह सर्व उत्तरोत्तर शुद्ध-रूप नैगम नयके ही वचन है, वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि मध्य घरमें तो महान् स्थान है आप कौनसे स्थानमें वसते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि मैं स्व-शय्यामें वसता हूं, यह संग्रह नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि शय्यामें भी महान् स्थान है आप कहां पर रहते हैं? व्यक्ति उत्तर दिया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रूप में वसता हूं, यह व्यवहार नय है; वले प्रश्नकर्त्ता प्रश्न किया कि असंख्याता प्रदेश अवगाह-रूपमें धर्म, अधर्म आकाश पुद्गल इनके भी महान् प्रदेश है, आप क्या सर्वमें ही

हुट, लम्ब, जिन्हा नव में बसता हूं यह
महानुभूत नयका बनन है ।

॥ दृष्टि तु जो पायली ज्यो ॥



कोई सुखा हाथों में नहीं (कोई) लेना
जा रहा था, किन्तु पुत्र, मर्दे कहां जाने हों ?
उम्मे कहा मजली करने को : उह कहलकही
कह रहा था नव किन्तु पुत्र मर्दे क्या करने
हों ? नव उम्मे कहा मजली । म. नैमन नयका
मज, उह कह मजली को नव किन्तु पुत्र,
क्या जाने हों ? मजली के मजली उह मजली
नैमन होगा नव किन्तु पुत्र के कहलक ही ?
उम्मे कहा मजली : मजली नैमन को कहलक
नव मजली को नव : मजली को कहलक के उह
उम्मे मजली को कहलक कहलक कहलक ।

हो मजली नव मजली कहलक के उह उम्मे
मजली को नव किन्तु मजली को
मजली कहलक ।

हवे शब्द नय आदि (शब्दनय, संभिरुद्ध एवंभूत नय) तीन नयवाले कहे के जय उसमें धान भरके उपयोग सहित गिनोगे तयही पायली कही जायगी ।

॥ दृष्टांत तीजो सामायिक ऊपर ॥

सामायिक शब्दों पर सात नयकी वर्णन ।

(१) नैगमनयके मतमें सामायिक करनेके जय परिणाम हुवे तयही सामायिक माने ।

(२) मंघदनयके मतमें सामायिकका उपकरण लेकर स्थान प्रतिस्तेष्वन जय किया गया तयही सामायिक माने ।

(३) व्यवहानयके मतमें मायध (मायज) जागका जय परिणाम (पचस्थान) किया तयही सामायिक माने ।

(४) अजसुप्रनयके मतमें जय मन, वचन, कायाके जाग शुभ वचन संगे तयही सामायिक माने ।

(५) शब्दनयके मतमें जब जीवको वा अजीवको सम्यक प्रकारसे जाण लिया फिर अजीवसे समत्व भावको दूर कर दिया तब ही सामायिक माने ।

(६) समभिरुद्धनयके मतमें शुद्ध आत्माका नामही सामायिक हैं, (केवल ज्ञानने सामायिक माने) ।

(७) एवंभूतनयके मतमें शुद्ध-आत्मा शुद्ध-उपयोग युक्त सामायिक वाला होता है, ऐसा माने ।

॥ पाठान्तर ॥

॥ सामायिक पर सात नय ॥

(१) नैगमनय वालो सामायिक करनेका परणाम होनेसे सामायिक मानें ।

(२) संग्रह नयवालो सामायिकका उपकरण से सामायिक माने ।

५२] श्री नय प्रमाणोंकी थोकड़ा ।

(२) संप्रहृनय वालो धांण फेंकने वालेको
दोष निकाले ।

(३) व्यवहारनय वालो रह-गोचरका दोष
निकाले ।

(४) अजुसुग्रनय वालो आपना कर्मका
दोष निकाले ।

(५) शुद्धनय वालो आपना जीव दुख
दुःख बांध्या दुम बांधने जीवका दोष निकाले ।

(६) समभिरुद्ध नय वालो भक्तिदयता
(ज्ञाननि गेमात्र भाव देया था) गेमा माने ।

(७) एवमूननय वालो जीवने भी सुख
दुःख है नहीं जीव सदा सुखी सच्चिदानन्द
निमित्त आत्मा है गेमा माने ।

॥ दृष्टान्त उठो गज्जा ऊपर ॥

— — — — —

(१) नगमनय वालो हाथ पगमें शुभ
लक्षण वा शुभ गत्या दर्शने गज्जा माने ।

दिया है ॥१॥ और शब्दनयके मतसे जो तीन कालमें शुद्ध उपयोग-पूर्वक है वही जीव है; अपित्रु (इसलिये) सम्यक्त मोहनी-कर्मकी वर्गना इस नयने शुद्ध उपयोग अर्थ ग्रहण कर लिया ॥५॥ सभिरुद्धनयके मतसे जिसकी शुद्ध-रूप सत्ता है और स्व-गुणमें ही मग्न है; नायक सम्यक्त पूर्वक जिसने आत्माको जान लिया है उसका नाम जीव है, इस नयके मतमें कर्म संयुक्त ही जीव है ॥६॥ एवंभूतनयके मतसे शुद्ध-आत्मा, केवल-ज्ञान, केवल-दर्शन-संयुक्त, सर्वथा कर्म रहित, अजर-अमर, सिद्ध-बुद्ध, पारगत इत्यादि नाम-युक्त सिद्ध आत्माको ही जीव माना है ॥७॥ इस प्रकार सातनय जीव को माना है ।

॥ दृष्टान्त आठमो सिद्ध उपर ॥



सिद्ध शब्दका वर्णन---नैगम नयके मतमें

कर्मोंको दूर कर दिया है, केवल-ज्ञान केवल-दर्शन संयुक्त लोकाग्र में विराज मान हैं, ऐसे सिद्ध-आत्माको ही सिद्ध माना गया है, क्योंकि सकल कार्य उसीका ही आत्माके सिद्ध है ॥७॥

इत्यादिक सर्व पदार्थ ७ नयकरी
प्रमाण कीजै ।



ए ७ नय माने ते सम्मदृष्टि । एक नय माने और छव नय न माने, दोय नय माने और पांचनय न माने, ऐसे जावत छव नय माने और एक नय न माने ते मिथ्या दृष्टि ।



लाल, पन्नालाल, हीरालाल मोतीलाल, फूत्ताराम, धूलोराम : वाईजातमें, केसरवाई कस्तुरी-वाई इत्यादि ।

(३) अर्ध-शून्य नाम उसको कहिये जिसका अर्ध न होय जैसे--छोक, उवासी, खांसी, हांसी, गाय की सम्भावना वाजिंत्रको शब्द बगैरे इसका कुछ अर्थ नहीं होता है ॥

(२) स्थापना निर्जं पका दांय भेद (१)

सद्भाव स्थापना (२) असद्भाव स्थापना ।

(१) सद्भाव स्थापना कितको कहिये ?
सरीखी मूर्ति, सरीखो आकार (च्यार भूजाकी मूर्ति च्यार भूजाको आकार) पोठीयाका मूर्ति और पोठीयाको आकार ।

(२) असद्भाव स्थापना कितको कहिये ?
कोई गोलमटोल पत्थर लेकर उसका तिनदुर तक, मालीपाना लगाकर कहें कि ये म्हाग भंरुं जी है, अथवा कोई पांच पंचटा (पांचोका)

और ये ही घीस वह जीव आश्री एवं चालीस
हुया जैसे कि सद्भाव स्थापना एक जीव आश्री
१० वह जीव आश्री १० ए घीस असद्भाव
स्थापना ; एक जीव आश्री १० वह जीव आश्री
१० ए घीस ; एवं ४० प्रकारकी स्थापना ।

(३) द्रव्य निक्षेपाका दोय भेद (१) आग-

म (२) नो आगम ।

आगम कहताः---शब्दादिक का अर्थ
उपयोग रहित शून्य-चित्त से करे, शास्त्र भण
पण अर्थ न समझे ।

नांआगमरा तीन भेद (१) जाणग शरीर
(२) भव्य शरीर (३) जाणग भव्यव्यक्ति-रक्त
शरीर ।

जाणगशरीर कहता--काई एक धावक
धावनक प्रतिप्रत्यक्षता जाण काल प्राप्त हुया
उसका शरीरको देखके बहे के आ धावक
धावनक जानता था. धावनक कहता था

लोकोत्तर—जेइमें (जे लोकोमें) समण गुण मुक्ता, (जे साधु गुण रहित जोग) ।

छकाय निराणुकंपा—छत्र कायकी दया रहित ।

हयाइव उदंमा—घोड़े जैसा उन्मत्त (तोफानी) ।

गयाइव निरंकुश—हाथी जैसा निरंकुशी याने अंकुश रहित ।

घड़ा—शरीरकी सुश्रपा करे ।

मटा (मटालेंची) तिपुठा— तप-रहित ।

पाडुगपट पउरणा---स्वच्छ वस्त्रके धारी ।

जिणाणं—आणा आण रहित. जिण आज्ञा विराधिक भगवानकी आज्ञा रहित ।

उमय कालं आवसग टावंति---दोनों वक्त प्रतिक्रमण करे ।

ए लोकोत्तर द्रव्य आवसग है उसको लोकोत्तर द्रव्य आवसक कहौजे ।

२) लोकोत्तर (३) कुपरावचन ।

लोकिक कहता---जो कोई रायवां, तलवर, गाड़वी, कोड़वी, इधसेटो सेनापति सबेरे तो उपयोग सहित भारत और शामको रामायण, सांभले, उसको लोकिक भाव आवसक कहते हैं ।

लोकोत्तर कहता---जो कोई साधु, साधवी, धावक, धाविका, तहमने, तहचिन्ने, तहलेशाय, तहभुसिय (अध्ववसाय) दाय वचन आवसक प्रतिक्रमण (आवसक टयंती) शुद्ध उपयोग सहित करे, उसको लोकोत्तर भाव आवसक कहते हैं ।

कुपरा वचन कहता---कोई चबचिगिया, परमगंडिया, पांडुरंगा, पानदंता नदरेमें उठ कर स्नान करे, धूप-दीप करे, तिलक लाप करे और ओंकार शुद्ध उपयोग सहित पोषण करके भोजन करे उनको कुपरावचन भाव आवसक कहते हैं ।

यह ४ चार निक्षेपा नव तत्व ऊपर
उतारते हैं ।

॥ १ जीव-तत्व ॥

(१) नाम निक्षेप—जीव ऐसा नाम, सो नाम
निक्षेपो, अजीवका नाम जीव रखे तो भी
नाम निक्षेपको अनुमानसे उसे जीव ही
माना जाय ।

(२) स्थापना निक्षेप—चिग्राम प्रमुखकी
स्थापना करे सो स्थापना निक्षेपो ।

(३) द्रव्य निक्षेप—पट द्रव्यमेंसे जो
जीव द्रव्य असंख्यान प्रदेशों में है सो द्रव्य-
निक्षेपो ।

(४) भाव निक्षेप—(१) उदय, (२) उपशम,
(३) चायक, (४) चर्यापशम, (५) प्रणामिक ।

इन ५ भावमें प्रवर्त्ते सो भाव निचोपो इन
पांच भाव निचोपेकी ५३ प्रकृति ।

(१) उदय भावकी २१ प्रकृति---

गति ४, लेश्या ६, कपाय ४, वेद ३,
असिद्ध १, अज्ञाणी १, अघृति १, मिथ्यात्वी
१, यह २१ प्रकृति ।

(२) उपसम भावकी २ प्रकृति---

उपशमसम्यक्त और उपशमचारित्र ये दोय ।

(३) ज्ञायककी ६ प्रकृति---

दानांतराय आदि पांच अंतरायका ज्ञय ५,
केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, ज्ञायक
सम्यक्त १, ज्ञायकचारित्र १, यह नय ।

(४) क्षयोपशमकी १२ प्रकृति---

ज्ञान ४ पहला, अज्ञान ३, दर्शन ३ पहला,
अंतर्गत ५, और क्षयोपशमचारित्र १, क्षयोप-
शमनमकिन १, संयमासंयम १, यह अटारह
प्रकृति ।

५. गंध २, रस ५, और स्पर्श ८, यह ३० भेद ।

(२) उपशम भावके २ भेद---

उपशम और उपशमनिष्पन्न ।

उपशम--८ कर्मोंको ढके हुये को जानना ।

उपशमनिष्पन्न के ११ भेद---

कषाय ४, रागद्वेष १, दर्शनमोह १,
चारित्रमोह १, दर्शनलब्धि १, चारित्र लब्धि
१, हृदयस्थ १ और घीतरागी १, यह ११ भेद ।

(३) क्षयक भावके २ भेद---

क्षय और क्षयनिष्पन्न ।

(१) क्षय—आठ कर्मोंका क्षय ।

(२) क्षय निष्पन्नके ३७ भेद---

ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ६, वेदनी २,
मोहनी ८ (क्रोध, मान, माया, लोभ, राग,
द्वेष, दर्शनमोह, चारित्रमोह), ४ गतिक
आयुष्य, नाम २, गोत्र २, जन्मगाय ५, यह

सो भावनिक्षेपो ।

॥ ४ पाप तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे पाप ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापके बतावे सो स्थापना निक्षेपो, (३) द्रव्य निक्षेपेसे अशुभ कर्मकी वर्गणा द्रव्यपणे प्रगमें सो द्रव्य निक्षेपो, (४) भाव निक्षेपेसे पापके उदयसे जीव दुःख वेदे सो भाव निक्षेपो ।

॥ ५ आश्रव तत्व ॥

(१) नाम निक्षेपेसे आश्रव ऐसा नाम सो नाम निक्षेपो, (२) स्थापना निक्षेपेसे अक्षरादि स्थापना सो स्थापना निक्षेपो (३) द्रव्य निक्षेपेसे मिथ्यात्वादि प्रकृति तथा नाम और मोह कर्मकी प्रकृति आत्मके साथ लोली-भूत हो कर कर्म शक्ति सहित पुद्गल ग्रहण

खिरे सो, (४) भाव निक्षेपेसे आत्मा निर्मल हो कर ज्ञान लब्धी ज्योपशम लब्धी, जायक लब्धी इत्यादि लब्धी प्रगटे सो भाव निक्षेपो ।

॥ ८ बंध तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्, (३) द्रव्य निक्षेपेसे कर्म वर्गणाके पुद्गल आत्म-प्रदेशसे बंधे सो, (४) भाव निक्षेपेसे मद्यपान जैसी, बंधकी छाक चढ़े सो भाव निक्षेपो ।

॥ ९ मोक्ष तत्व ॥

(१-२) नाम और स्थापना पूर्ववत्, (३) द्रव्य निक्षेपेसे जीवका निर्मल पणा, (४) भाव निक्षेपेसे आत्माके निज गुण जायिक समकित केवल ज्ञान सो भाव निक्षेपो ।

इति ४ निक्षेपा ६ तत्व ऊपर उतारया सो समाप्त ।

क्षेत्र केहता—लोक अकाश प्रदेश ।

काल केहता—समय आवलकादिक जाव
मुद्गल परावर्तन सुधी ।

भाव का तीन भेद—

(१) स्वभाव (२) गुण (३) पर्याय, स्वभाव
तो वस्तुको स्वभाव, गुण जाण पणो, पर्याय
पलटै ।

॥ पांचिसौ द्रव्य ते भाव ॥

द्रव्यथी जीव शाश्वतां छै ।

भावथी जीव अशाश्वतो छै, जैसे किसी
भमरे ने काष्ठ कोर्युं ते कोरनीमें कको [क]
कोराणो पण भमरो नहीं जाणकेमें कको [क]
कोर्युं, स्वभावे कको [क] कोराणो, कोई पंडित
पुरुष आवी कको [क] देख्यो और कके [क]

क्षेत्र केहता—लोक अकाश प्रदेश ।

काल केहता—समय आवलकादिक जाव
पुद्गल परावर्तन सुधी ।

भाव का तीन भेद—

(१) स्वभाव (२) गुण (३) पर्याय, स्वभाव
तो वस्तुको स्वभाव, गुण जाण पणो, पर्याय
पलटो ।

॥ पांचसौ द्रव्य ते भाव ॥

द्रव्यधी जीव शाश्वतो छै ।

भावधी जीव अशाश्वतो छै. जैसे किसी
भमरे ने काष्ट कोर्युं ते कोरनीमें कको [क]
कोराणो पण भमरो नहीं जाणकेमें कको [क]
कोर्युं, स्वभावे कको [क] कोराणो, कोई पंडित
पुरुष झावी कको [क] देख्यो और कके [क]

(२) अनुमान प्रमाणसे---ब्रह्मो संपदा, बल, रूप, जाती ऐश्वर्यकी उत्तमता देख अनुमानसे जाणोकी यह पुण्यवंत है, जैसे सुबाहू कंवरकी संपदा देख गौतम स्वामी प्रमुख साधुजोने जाण्या की यह पुण्यवंत जीव है यह अनुमान प्रमाण ।

(३) आपमा प्रमाणसे---पुण्यवंतको पुण्य-
वंतकी आपमा देखे. जैसे---देवीदुर्गागोजहा
अर्थात् पुण्यवंत जीव दुर्गादेव इन्द्रके गुरु
स्थानीय देव जैसा सुख भांगता है. तथा
चन्द्राद्वयतरांगं भर्ताद्वय मण्डप्याणां अर्थात्.
जैसे ताराके समूहमें चन्द्रमा शोभता है तैसे
मनुष्योंके घुन्दमें भग्ननामा महागजा शोभने
हैं इत्यादि आपमा प्रमाण जाणना ।

(४) आगम प्रमाणसे---शुभ प्रकृति और
शुभ वागन पुण्य बंध होता है शालमें बड़ा है

— 27 —

1. 2. 3. 4. 5. 6.

7. 8. 9.

10.

1. 2. 3. 4.

5. 6.

7. 8.

1000 1000 1000 1000

1000 1000 1000 1000 1000 1000

1000 1000 1000

1000 1000 1000

सौलहसो मुक्ताने गर्मता (मुख्य गौण) ।

मुक्ता कहता—कोयल काली.
गर्मता कहता—वर्ण पावे पांच ।
मुक्ता कहता—सुओ हरो ।
गर्मता कहता—वर्ण पावे पांच ।
मुक्ता कहता—जीव अज्ञानो ।
गर्मता कहता—जीव ज्ञानो ।
मुक्ता कहता—संन्यापति ।
गर्मता कहता—संन्या ।

मुक्ता लां कमें दीननी हुई वस्तु और
गर्मता उसी वस्तुको निज स्वरूप जैसे
मुक्तासे धुगलो धोलो गर्मतासे वर्ण पांच ।



પણ અંતરથી તેના ગુણ વધારવા માટે ભલું
ચહાય છે ।

॥ ચોથો સ્વભાવ ધર્મ કહે છે ॥

તે જે વસ્તુ જીવ અથવા અજીવ તેની જે
પ્રણિત છે તેના વે ભેદ:---

તેમાં એક શુદ્ધ સ્વભાવથી અને ધોજો
કર્મના સંયોગથી અશુદ્ધ પ્રણતી છે તે જીવને
વિષય કપાયના સંયોગથી વિભાવના થાય છે,
હવે જીવ અને પુદ્ગલને વિભાવ છે તેને દૂર કરીને
જીવ અપણા જ્ઞાનાદિક ગુણમાં રમણ કરે તે
સ્વભાવ ધર્મ અને પુદ્ગલનો એક વર્ણ, એક ગંધ,
એક રસ વે ફરસમાં રમણ થાય તે । પુદ્ગલનો
શુદ્ધ સ્વભાવ ધર્મ જાણવો । એ સિવાય ધોજાં
ચાર દ્રવ્યમાં સ્વભાવ ધર્મ છે પણ વિભાવ ધર્મ
નથી તે, ચલણ ગુણ, સ્થિર ગુણ, અવકાશ ગુણ,
વર્તના ગુણ તે, પોતપોતાના સ્વભાવેને છોડતા
નથી તે, માટે શુદ્ધ સ્વભાવ ધર્મ છે. એ ચાર

कलकत्ते में विक्रम सम्बत् १९७८ मगसर
सुदी १३ मङ्गलवार तारीख १३ दिसम्बर
सन १९२१ ई० को लिख्यो ।

❀ इति श्री नय निक्षेप प्रमाणको
थोकड़ो समाप्त ❀

॥ सेव भंते सेव भंते तेमव सच्चम् ॥



तेजु लेश्या, पद्म लेश्या, शुक्र लेश्या ए
तीन लेश्यारी सुगंध प्रशस्त, नामे-मली-जैसे
फुलरी सुगंध निकले इणसे घणा अधिक सुगंध
जाएनी ।

(४) चौथो रस द्वार ।

कृष्ण लेश्यागं रस---जैसा कड़वे तुम्बरो
रस, जैसा नीमडा रं रस, जैसा कटुक रं
रस, जैसा गहीणा नामे वनस्पति रं रस,
इनसे घणा अधिक कड़वा ।

नील लेश्या रं रस---जैसा मुठ, पीपल,
काली मीर्च, गज पीपलरो रस, इनसे घणा
अधिक तीखा ।

कापोत लेश्यागं रस---जैसी काची केरी रं
रस, काच काठरो रस इनसे घणा अधिक
खाटो रस ।

नहीं राखे, छव कायारी हिंसा करे, आरंभ रे विपे तिव्र प्रणाम हुवै, द्रोही, पापरे विपै साहसिक निधंस प्रणामी, सुग रहित, अजितेन्द्री इसा योग प्रवर्ते सो कृष्ण लेश्या रा लक्षण जाणना ।

नील लेश्यारा लक्षण—इर्पा करे अमर्पा आणे, अतपस्वी, मायावियो, तपस्या करे सो सुहावे नहीं, पाप करतो लाजे नहीं, गिरधी, द्वेषी, धूर्त, प्रमादी, रसरो लोलूपी, मायागवेपी, आरंभरो अव्रती, द्रोही, पापरे विपै साहसिक ऐसा जोग प्रवर्ते सो नील लेश्या रा लक्षण जाणना ।

कापोत लेश्यारा लक्षण—वांको बहे (वाको चले) निबद्ध माया करे, सरलपणा रहित मिथ्यात्वी, अनार्य दुष्ट वचन बोले. मच्छर भाव आणे इसा जोग प्रवर्ते सो कापोत लेश्या रा लक्षण जाणना ।

एरा घणा, छठी नारकीमें लेश्या पावे एक
ए, सातमी नारकी में लेश्या एक महा
ए ।

१० भवनपतिमें लेश्या पावे ४ (कृष्ण,
त, तेजु, कापोत) ।

पृथ्वी कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३
तडी ।

पृथ्वी कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४
तडी ।

अपकायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३ पेहलडी ।

अपकायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे ४
तडी ।

घनस्पति कायरे पर्यापतामें लेश्या पावे ३
तडी ।

घनस्पति कायरे अपर्यापतामें लेश्या पावे
हलडी ।

सत्य शास्त्र के श्रवण से,
चीन्हें धर्म सुजान ।

कुमति दूर नहै ज्ञान हो,
मुक्ति ज्ञान से मान ॥३॥

सच्चे शास्त्र के सुनने से बुद्धिमान् जन धर्म को अच्छी तरह
परिचानते हैं, शास्त्र के श्रवण से खराब बुद्धि दूर होकर ज्ञान होता
है और ज्ञान से मुक्ति अर्थात् अक्षय सुख मिलता है ॥३॥

नहिं होंवै जिस शास्त्र से,
धर्म प्रीति वैराग ।

निकमा श्रम तहँ क्यों करो,
वृथा लवै ज्यों काग ॥४॥

जिस शास्त्र के सुनने से न तो वैराग्य हो और न धर्म में ही
प्रीति हो, ऐसे शास्त्र में व्यर्थ परिश्रम नहीं करना चाहिये, क्योंकि
ऐस का पदना काकमापा के समान है ॥४॥

चरण एक वा अर्द्ध पद,
नित्य सुभाषित सीख ।

भूख हूँ पण्डित हुँवै,
नदियन सागर दीख ॥५॥

एक पद अथवा आधा पद भी प्रतिदिन सुभाषित कर संग्रह

